Paper- II
By - Bakhtiyar Sir
17/04/2020

(12)

① (गम)

Dynamic Aspects of Mind

Ques:— "The Ego has to serve two masters without clashing interest." Explain the nature of dynamic features of mind in the light of above statement.

Ans:— मनुष्य का personality system बड़ा complex होता है। और इस complexity की वजह से ही विभिन्न विद्वानों ने इसकी व्याख्या विभिन्न रूपों में की है। Dr. S. Freud एक ऐसा depth psychologist था, जिसने सर्वप्रथम human personality या mind को तीन aspects में बांटा —
① Topographical ② Economical ③ Dynamic aspect.

उपर्युक्त तीनों aspects के आपस में सम्बन्धित होने के बावजूद इनमें dynamic aspect सबसे ज़्यादा pronounced बताया गया है। self के dynamic aspect से Freud का मतलब वैसे agency से था, जिनके द्वारा instincts में पैदा हुए emotional conflicts का solution होता है। self या personality के इन agencies को Freud क्रमशः Id, Ego और super ego के नाम से पुकारते हैं। कहना न होगा कि हर मनुष्य का जीवन इन्हीं agencies के आपसी conflict और co-ordination की एक जीती जागती तस्वीर है। अनुभवों से स्पष्ट है कि हर सांस में इच्छाओं की सैकड़ो दुनियां बना करती हैं, पर वास्तविकता उन्हें बनने नहीं देती। इसलिए मन में भाव उठते हैं, किसी को प्यार करो, किसी को मार डालो। मगर परिस्थिति सोचने पर मजबूर कर देती है कि इसके क्या अंजाम होंगे? इन दो विरोधी विचारधाराओं का conflict, जिन्हें self या psychic के दो रूपों का केन्द्र कह सकते हैं, के कारण हमारा व्यवहार निर्देशित होता रहता है। एक stabilized personality वह है, जहां psychic energy अपना मानसिक संतुलन बनाए रखने में हमेशा जुड़ा हो और इस संतुलन का असर कैसा होगा, यह Id, ego और super ego के structural

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

और functional खूबियों के कारण, आपसी interactio. के कारण तथा इनके developmental history के कारण निर्धारित होती है।

Ego इंसानी self का एक ऐसा agency है, जिसे हमेशा दो विरोधी स्वभाव वाले self के part के साथ रिश्ता बनाये रखना पड़ता है। personality को मिलने वाला stability और संतुलन इसी Process का अन्जाम होता है। C.S. Hall के अनुसार —

"In the well adjusted person the ego is executive of Personality, controlling and governing the Id and super ego, and maintains its commerce with the external world in the interest of total personality and its far fetched need."

Freud के अनुसार – Id की बेतुकी इच्छाओं के satisfied न होने से जो frustrations पैदा होते हैं, उसी से Ego का development होता है। Ego व्यक्तित्व का एक ऐसा part है जिसका सम्बन्ध external reality से बना रहता है और हमारे चेतन मन का सच्चा representative होता है। Freud ने इसे self conscious intelligence के नाम से पुकारा, क्योंकि ego किसी भी काम को सोच विचारकर करती है। Time, Place, और situation की इसे पूरी जानकारी रहती है। यह Id की बेशुमार इच्छाओं के satisfaction का ख्याल वहाँ तक रखता है, जहाँ तक समाज और reality में तालमेल बना रहता है। Ego इंसान के perception के आधार पर बनता है — वैसे ही, जैसे Id की पैदाईश बेशुमार instincts के बीच से होती है। याद रहे कि ego को Id से पूरा-पूरा अलग नहीं माना जा सकता। क्योंकि बनावट की दृष्टि से ego का नीचला हिस्सा Id में ही डूबा रहता है। इसी वजह से ego को partly unconscious माना जाता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सोई हुई हालत में भी यह स्वपनों के संसार पर censor लगाए रहता है। कुल मिलाकर Ego का इस प्रकार स्वरूप बनता है:—

(A) Ego की अपनी कोई energy नहीं होती और जो energy होती भी है, वह cum-fluid होती है। फिर भी यह व्यक्तित्व का executive होता है।

(B) यह शरीर और मन को मज़बूत करने वाली ज़रूरतों को satisfied करता है और self को तरह-तरह के चोटों से रक्षा करता है।

(C) इसका वास्ता reality principle से होता है।

(D) Ego का विकास Id की primary process के बाद शुरू होती है।

(E) यह अधिकतर conscious और थोड़ा सा unconscious हुआ करता है।

(F) यह Id और super ego के आपसी विरोधी ताकतों के बीच co-ordination कायम करता है।

Id इन्सानी मन का एक ऐसा dynamic aspect है, जिसका सम्बन्ध basic instincts से रहता है और यह बच्चों की एक विशेष विशेषता होती है। basic instinct का expression हम pleasure-pain के रूप में पाते हैं। सभी immoral और unsocial desire की पैदाइश Id से ही होती है जो इतना childish होता है कि ना उसे समय की जानकारी होती है और न उसे reality की। जब Id की इच्छाएं satisfied नहीं हो पाती हैं तो frustration ही इन्सान को हाथ लगता है। Purely unconscious होने के कारण इसकी कुछ सी इच्छाएं shamful, peculiar होती हैं जिन पर विचार करने से इन्सान को सिर्फ पश्चाताप और guilt feeling होती है। इसका ही एक उदाहरण अपने family members के साथ sex urge को satisfy करना है। सामान्य भाषा में Id को एक ऐसा जंगली जानवर कहा जा सकता है, जिसका एक मात्र उद्देश्य bodily pleasure को हर स्थिति में प्राप्त करना होता है। pleasure हासिल करना और Pain avoid करना—

मानों इसका स्वभाव होता है। कुल मिलाकर इसकी निम्नलिखित विशेषताएं हैं:—

(A) Id सभी psychic energy का मात्र source होता है, जिसमें instincts खास तौर से भरे होते हैं।

(B) इसकी क्रियाएं reflex action, day dreaming और wish fulfilment के रूप में अपना satisfaction पाती हैं।

(C) Pleasure-pain principle ही इसका guide है।

(D) जब ego और super ego के द्वारा इसकी energy flow की दिशा रुक जाती है तो Id fantasy (कल्पना) में भटकने लगता है।

(E) यह unconscious का true representative है और इसमें संगठन की कमी होती है।

"The third major institution of personality — the super ego — is considered as the moral or judicial branch of personality."

(C.S. Hall)

super ego न केवल Id को pleasure दिलाता है और न ego को reality दिलाता है, बल्कि इसका उद्देश्य perfection प्राप्त करना होता है। स्पष्ट है कि super ego का विकास समाज और सामाजिक बंधनों के फलस्वरूप होता है। पशुओं में इसकी सर्वथा कमी रहती है। कभी-2 इसकी तुलना वैसे parent से की जाती है जो अपने नियमों को reward और punishment देकर लागू करता है। याद रहे कि ego ही reward और punishment का भागीदार बनता है, क्योंकि उसी पर समस्त नैतिक और अनैतिक कामों की जवाबदेही होती है। super ego की निगाह में किसी thought का उतना ही महत्व है, जितना deed का। चोरी की बात सोचना उसकी नज़र में उतना ही बड़ा अपराध है जितना चोरी करना। ego को मिलने वाले rewards and punishments या तो physical nature के हो सकते हैं या psychological. जैसे, feeling of pride, guilt or

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

inferiority इत्यादि। सब के पीछे यही ख्याल होता है कि super ego वैसे impulses पर censor लगाए जिनकी खुली छूट से व्यक्ति और समाज दोनों को खतरा मिल सकता है। इस प्रकार super ego lawlessness, internal control द्वारा कर इन्सान को law abiding citizen बनाता है।

Self के तीनों dynamic constituent के आपसी सहयोग पर ही सामान्य व्यक्तित्व का विकास निर्भर करता है। एक खास point of view से सोचने पर सही लगता है कि ego को एक ही साथ clashing interest रखने वाले दो masters (Id & superego) को serve करना पड़ता है। क्योंकि इसी पर adjustment की सारी responsibility टिकी होती है। Id के सभी demands को समाज कबूल नहीं करता और super ego के सभी ideal को न ही वह पूरा कर सकता है। ऐसी दशा में जब व्यक्ति का balance बिगड़ने लगता है और mental conflicts के भार से उसका self बिखरने लगता है, तो balance कायम रखने के लिए ego ही दोनों के बीच compromise लाता है। ठीक ही कहा गया है कि —— "The ego has to serve two masters with clashing interests."